

## पारिजात-हरण नाट

॥ नमः श्री कृष्णाय ॥

श्लोक

नमः कृष्णविष्णोहृद्युतानन्तशक्ते  
नमो रामराजीवनेश्वरभो ते ।  
नमो ब्रह्मर्षे मुरारे परेश  
नमो विश्ववासे प्रसीद प्रसीद ॥

अपिच

खगेन्द्र समाक्ष्य निर्जित्य शत्रुं  
मुदा लीलया देवकीनन्दनो यः ।  
मियं पारिजातं जहार प्रियार्थं  
परेशाय कृष्णाय तस्मै नमो मे ॥

सूय०—परिलेहि श्रीकृष्णक प्रणाम कये कहूँ समासद लोकक सम्बोधि बोल ।

श्लोक

भो भोः सामानिका ईश कृष्णस्य जगतीपतेः ।  
श्रीपारिजातहरणं यावत् सम्पति पश्यत ॥

अथ प्रतिभा !

जय जय कृष्णदेव निज अंश । लीला नाशित कंश रावण ॥  
जाकेरि चरित्य भक्त-अवतंश । कमला केलि कमल कलहंश ॥  
तनु इन्दिर श्यामल जोरि । तथि परकाशित पीत पिचोरि ॥  
तद्धित जडित यच्च तथ घनखंड । मकरि कुण्डल मंडित मंड ॥  
कनक किरीटि रत्न अवगाश । कुचित चारु चिकुर परकाश ॥  
चचिकर कर्ण सुवन मन भूल । नासा नील रत्न तिल फूल ॥

१५३

नवन कमल मुहु-पंकज लोह । एहु मिछल जय चान्द चकोर ॥  
भातिक दशन हासा तथि थोर । आरक्त अघर बन्दुलि रवि चोर ॥  
रविर चिञ्चक भेलि हय ताप । भ्रू-युग गांजी मदनकेरि चाप ॥  
कुटिल अलक कुल तिलक ज्योल । हृदये हेमक हार अमोल ॥  
आतिथ्य मतिम भाला लुले । कोरूम कंबु-कंठ मह तुले ॥  
चारु उदर दर हृदय विशाल । लम्बित पंचवरण वनमाल ॥  
संचर चंचर मधुकर लोहे । श्रीश्रीवल उरस्थल सोहे ॥  
चारु चतुरभुज अंश भुअंग । रत्न केटर उजोर तनु संग ॥  
कंकण कनक कनक कव-मूल । करतल राता उतपल फूल ॥  
अंगुलि चारु हीर हेम मोती । नखमणि निन्दित चौदक जीति ॥  
अरि अरुद्रिद कौमुदी कम्बु पाणि । कोकिल-कंठ अभिया भुरे वाणी ॥  
नार्मि कंज रंज अतुल्यम । चिहिको जगम भेलि नोहि ठाम ॥  
कटितय कनक कौन्सी वरिम्भ । उर करिकवर मरकत वम्भ ॥  
लम्बि नितम्ब पीत रवि चिर । पद-पंकज भुरे रत्न मंजीर ॥  
नील आंगुलि यच्च चपक कोर । नखचय चास चांद उजोर ॥  
कमल पदतल अलकत भान्ति । अञ्ज पंकज यव अंकुश कान्ति ॥  
पाशा लासा सेत चामर ढोल । संचर राजहंस दुहो कोल ॥  
माथे छत्र चास शशीकांत । वरिले सिद्धर आभिया नितान्त ॥  
मधुस मुवति भक्त मनपुर । मनमथ कोटि जाहे नहि दुर ॥  
होइ जय नील नव पनखंड । उगरे रह रविकर परखंड ॥  
पूर्णमास चांद दुहो दुहो पाशा । तथि कव इन्द्रचाप परकाशा ॥  
बहे दुहो धार मुरपरि नीर । उजरि विजुरि रह तथि धिर ॥  
अभिनय सूर उगत तनु माफे । ताहे छवि यक-पकति थिराजे ॥  
तारा भिक्कमिक कर बहु ठामा । तव होइ सोइ मुवति उवमा ॥  
रहु हृदिपंकज सोइ मुरारि । अब सोइ लोइ देखु विचारि ॥  
कोटि कल्पतक पूरण कामा । ऐचन ईश रह्य निज ठामा ॥



ताहि चरण चित्त लाइ । तनु चित्तामणि बिकलेहि जाइ ॥  
 आवे निकट नित अन्तक गरजि । लेहु हरि-चरण शरण सब वरजि ॥  
 जो मुंहे राम नाम ताहि अंसे । कलियुग काल भुजंगम दंसे ॥  
 सोहि कृष्णक नाटक उपामा । पारिजात हरण आइ नामा ॥  
 सकतिक साथि सुनइ सब लोह । हरि दिने शान्धव आन नाहि कोई ।  
 कृष्ण किंकर ओहि शंकरे बोल । कर अंग नरसब हरि हरि बोल ॥

सूत्र०—आहे साम्राजिक लोक, जे जगतक गुरु, जाहेरि सजना सबला संगार, ब्रह्मा, महेश, बन्धित पाद-पद्म, परम पुरुष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सकमिणी सत्यभामा सहित ओहि सभा मध्ये प्रवेशि कहो नरकासुर वध पारिजात हरण लीला यात्रा कौतुके करव ताहे सावधाने देखइ सुनइ आतपरेपुण्य कलित नाहि नाहि । जानि निरन्तरे हरि बोल । तदन्तर सूत्र पुछत । आहें संगि, कि वाद्य बाजे ।

संगी बोल । आहें देवबाद बाजत ।

सूत्र०—अः मिलल मिलल ।

### श्लोक

प्रवेशमकरोद्देवो गोविन्दो गङ्गाधरः ।  
 सकमिणी सत्यभामाभ्यां सह चारुचतुर्भुजः ॥

कथा—आहे लोक, हाय जे कहलु ओहि परमेश्वर श्रीकृष्ण सभाजें यात्रा निमित्तो एथा आवस । परम सावधान हुया ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल । इति सूत्र निष्क्रान्तः ।

### प्रवेश गीत

राग लिङ्गुरा—एकताल ।

भू०—अबें गरुड़-चेतु कपो परवेश ।

मदनक लाज हेरि रुच लेख ॥

पद—इधाम नुरति दीपित पितबासा । नुहुड कुण्डल मणि मुख परकाशा ॥  
 कर कंकण वनमाला उरे लोले । चरण माके मजीर कह रोले ॥  
 कौदि मदन जिन उजर मुरारि । संगे सत्यभामा सकमिणी वर नारी ॥  
 शरीरक जोति जलध विषा पाश । कहय शंकर हरिदासकु दास ॥

सूत्र०—आहे सभासद लोक, श्रीकृष्ण पत्नी सब सहित कौतुके दृश्य रूप कहो सकमिणी सहित एक मन्दिर रहल । सत्यभामा निज मन्दिरे रहल ।

### श्लोक

पश्चात् पुरन्दरो देवो नारदेन सहायतः ।

प्रणम्य केशवं सर्वं शोकाच्च मौम चेष्टितम् ॥

सूत्र०—तदन्तर, देवता इन्द्र नारद सहित आति कहैं श्रीकृष्णक विरे परनाम कथ कहैं नरकासुरक विशेषता जैसे निवेदल । नारद आशीर्वाद कथ श्रीकृष्णक हाते जैसे पारिजात निवेदल । सकमिणीक साथे जगतक नाथे जैसे पिन्दाथल । आहें लोक, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग आशोवारि—परिताल ।

भू०—अहरावत कथे वासव आवे ।

आगहि नारद हरि गुण गावे ॥

पद—सुन्दरी रमणी शची एकपाशे । चले भ्रूंग अंग लभलासे ॥

माथे छत्र वज्र एकु हाथे । कह शंकर गति गोपिनी नाथे ॥

सूत्र०—तदन्तर नारदक देखि श्रीकृष्ण सभाजें उठि कहैं सापटे प्रणाम कयेल । नारद हात तोलि चिरंजीव चिरंजीव बुलि आशीर्वाद श्लोक पढ़ल ।

### श्लोक

अयमय यदुदेवो देवकीनन्दनरत्नम्

भुवनपति समस्तोर्वचिताङ्गः सदैव ।

निजजनभयहारिन् सृष्टिसंहारकारिन्

असुरनरकतन्तान् सम्प्रतं पाहि देवान् ॥

कथा—ओहि आशीर्वाद कथे श्रीकृष्णक हाते पारिजात दिसे नारद ताहेक महिमा कहल ।

नारद—हे कृष्ण, अहि पारिजातक संग तीनि महरेक पत्र जाइ । ओहि पारिजात जाहेर यहें खे धनजन किमव वाइये नाहि । ओहि देवदुर्लभ पारिजात जो



नारि परिधान करे, से पुत्रक महिमाये परम सौभागिनी हव । ताहेक चारि चारी स्वामी कथाये जाये नाहि । अः ओहि कुसुमक महिमा कि कहव ?

सूत्र०—ओहि बुलि नारद चोवडि पारि बैठि मौन रहल ।

श्लोक

श्रुत्वा कुसुम-माहात्म्यं रुक्मिणी केशवप्रिया ।

प्रणम्य स्वामीचरणं पारिजातमयाचत ॥

कथा—भुनिक मुखे कुसुमक महिमा शुनि रुक्मिणी परम कौतुके कृष्णक गौरि लागि करजोरि बोलल ।

रुक्मिणी—हे स्वामी हामी तोहार प्रथम पतनी जानि ओहि देवदुर्लभ पारिजात प्राणनाथ हामाक देहु ।

सूत्र०—ओहि बोलि जैसे कुसुम मंगल ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राज श्रीगन्धार—जातिमान ।

प्र०—कौतुके रुक्मिणी ; नगिवे स्वामीक पाये

मागे आँखुरि भरि हात ।

आहे पिड,

अथ प्राणनाथ

माये मिळावो मोहि

ओहि कुसुम पारिजात ॥

पद—आहेर गुण शुनि मुनि मुखे माधव

साधु अतवे सोबी मान ।

भक्त कृपाल

छागु चरण तेरि

करहु कुसुम मोहि दान ॥

तोहारि प्रथम

पतनी परम स्वामी

जानि पूरइ मोहि आशा ।

अनीक वाली शुनि

हासे रसिक हरि

कहेतु संकर कृष्ण दास ॥श्रु॥

सूत्र०—तदनन्तर रुक्मिणीक अति कातर वाली शुनि श्रीकृष्ण हाँसि हाँसि हाते तोलि पुयाक गौरवे कले वैठाइ कोतुके जगतक नाथे माथे पारिजात पिन्हावल । रमणीक बाँछा सकल भेल । तदनन्तरे पुया सहित श्रीकृष्ण सादरे नारदक वार्ता पछल ।

कृष्ण—हे मुनिराज, तोहों कुशलै आवल ? अः तोहारि आगमने आजु हमार द्वारिका-पुरी पवित्र भेल । तोहारि दरशने हामु कृतार्थ भेलों ।

श्लोक

कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा विहस्योवाच नारदः ।

निजभृत्यस्यैवाहं मयि मायां करोषि किम् ॥

नारद—हे स्वामी कृष्ण, मनुष्य-चेष्टा देखावा सबलोक मोहिल ; तोहाक ईश्वर बोलि जानथे नाहि । हामु तोहारि भक्तिकवले लव जानि ; हामाकु मोहिते चाव । अः स्वामी शुनइ ।

पथाइ—हे परमेश्वर जगत निवासा । हामु नारद तुआ दासकु दाता ॥ भरमो दिश दश तुआ वश गाथा । हामाकु आशु करयि ओहि माया ॥ जगत उद्धार जाहेर चरित्र । ताहेक हामु कथल पवित्र ॥ जाहेर नामे मुकुति-पद पाइ । सो हरि कर भुति नति कतिक्काइ ॥ तुहुँ जगत-गुण-देवक देवा । तोहारि चरणे रहोक सेवा ॥ मुखे जोनो न चारहु तुआ गुण नाम । मागु अतवे अर तोहारि डाम ॥

नारद—हे कृष्ण, तुहुँ परमपुरुष, नारायण भूमिक भार हरण निमित्त अवतरिल । साम्प्रत पापी नरकागुरे देवतासबक बहुत दुःख लागवे । तन्निमित्त दासी सहित इन्द्रदेवता तोहारि चरणे धारण लेखइक ; हे श्रीकृष्ण देखो देखो ।

सूत्र०—ओहि बोलि नारद मौन रहल । तदनन्तर श्रीकृष्णक आजु परि पुरन्दर परणाम कये कहँ, सभार्ये कयुरि भुति बोलल । ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

पथाइ—जय जय सादन देव । जय धाता-कृत सेव ॥

जय भक्त भय हारी । जय जय ईश्वर मुगरी ॥

आकेरि नाम उचारि । पाइ पदारथ चारि ॥



जीव निवन्ता तुहुँ अज । बन्धो तुआ चरण-पंकज ॥  
 अवक धेतुक कंस । मारल असुर सर्वस ॥  
 हरलि भूमिकेरि भार । मकलक हेतु अवतार ॥  
 रामप्रत गोचर हमारि । बान्धव शुनह मुरारि ॥  
 अब नरकासुर पाप । कवलि हरि उपताप ॥  
 आनल स्वर्गक मारि । देवक अतये कुमारी ॥  
 सर्वस्व नारहे हमारि । तुया पावे कयल गोहारि ॥  
 पुरन्दर—हे स्वामी कृष्ण, पापी नरकासुरे कोन न करल ? वरुणक छत्र, मणि पर्वत,  
 ए सब काहि आनल । हे कृष्ण कि कह्य ! मातृ अदितिक कुन्दल दोहों  
 राखवे नाहि पारल । आर हमार हेइते कि रहल ? हे कृष्ण, कौटिकौटि  
 ब्रह्माण्डेश्वर तोहारि चरण चोरि हमार गति नाहि । वाम जगन्नाथ, नाहि नाहि ।  
 सूत्र०—ओहि बोलि कृष्ण आसु कामि कामि पुरन्दर छुटि परल ।

श्लोक

हृत्वा दुःखं महेन्द्रक भुत्वा च भौमचेष्टितम् ।

आश्वास्य आसवं हस्ते गृहीत्वोवाच केशवः ॥

सूत्र०—तदन्तर महेन्द्रक दुःख देखिये, परम कृपामय नारायण हाते चरि गोलि इन्द्रक  
 आश्वासि बोलल ।

कृष्ण—हे महेन्द्र, तोहों ताप तेजइ । तोहारि बेरी पापी नरकासुर, से गतासु भेलि ।  
 ताहेक मारि देवता-प्रयोजन सत्तरे साधव । अहि निष्टे जानि तुहुँ आनन्द हुवा  
 सत्तरे अग्रावली चलइ । नरकासुर बधिते हामु आबु पथान करव ।

सूत्र०—से समये नारद आसि कहुँ इन्द्रक बोल ।

नारद—हे पुरन्दर, श्रीकृष्ण जेलन अंगीकार कयल तोहार शत्रुक देखने कथपात भेल ।  
 इहात शंका नाहि, तुहुँ आसु हुवा चलइ । शोहाक निमित्ते श्रीकृष्णक कातर  
 कय हामु पासु लया जावव । चिन्ता नाहि, चलइ ।

सूत्र०—ओहि निर्भय बाणी सुनि शसव श्रीकृष्ण नारदक प्रदक्षिण करि कहुँ परि परणाम  
 कयल । बिदाय लेवा ऐरावते चरि इन्द्र चलल ।

श्लोक

मुनिर्माधवमाहेदं गन्तुं स्वरय केशव ।

द्वारवत्याः श्रियं पश्यन्मेवास्मि चास्ति कन्यथ ॥

नारद—हे कृष्ण तुहुँ चलिवाक सत्तरे साजइ, हामु तोहारि द्वारकापुरीक कौतुके देखिये  
 एइखाने आवत्र ।

सूत्र०—ओहि बलि नारद हरि गुण गाइ जैसे चललि ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे  
 हरि बोल ।

पयाइ

श्रीगान्धार राग—परिताल ।

ध्रु०—चललि नारद हरि गुण गाइ । भरमे द्वारकापुरी सम्पत्ति चाह ।

पद—रतने रचित घत हरिक आवासा । जेछे सुरपुर कर परकासा ॥

पेखल पाछु भुवन अनुपमा । आलने शिक बेटि सत्यभामा ॥

पूर्णमाक चौद वदन परकासा । चिरंजीव बोलि नारद कच हासा ॥

देखि मुनिक धनी अवनत काह । परि परणाम कयलि पुन माह ॥

जीवतु जीवतु नारद बोल । डाकि करहु नर हरि-हरि बोल ॥

सूत्र०—तदन्तर वासुधा चयडि पारल । मुनि आसन भिडि तथि बैठल ।

श्लोक

नारदः सादरं देवीं सम्बोधाह हरिप्रिया ।

कृष्णस्य कर्मविषमं सत्यभासे निनोष मे ॥

नारद—आ हे देवी सत्यभामा, तोहारि स्वामी श्रीकृष्णक बड़ि बिसम चेष्टा देखल ।

हा हा माव, तुहुँ दुर्भागा भेलीइ । हामु आबु से जानलु ।

सत्यभामा—हे मुनिराज, तुहुँ कि कह्यील ? हामु किलु बुझये नाहि ।

नारद—हा हा तोहाक विधि बंचल । हे माव, कि कह्य ? कहिते बड़ दुल लागल ।

सूत्र०—ओहि बोलि हेठ माथे ठेस कय रहल मुनि ।

श्लोक

सत्यभामाभवाद्भीता निशान्य मुनिभाषितम् ।

दृष्टं कथय किं कुत्र तं पुच्छसि पुनः पुनः ॥



कथा—शुनि भीत हया देवी: करबुद्धि बोलल ।

सत्यभामा—हे मुनिराज, हामु आनु मोह सम सौभागिनी आवरि नाहि । से स्वामी कृष्ण हामाक चाडि कतिहु जाये नाहि । तुहु आनु कोनो ठामे कि देखल कि शुनल ! हामाक शपत, सत्यरे स्वरूप बात कह । चित्त चरि उदवेग करये, मुनि मौन चाडह ।

श्लोक

राष्ट्रवा देव्याः मुनिर्वन्ध कथयामास सादरम् ।

कृष्णस्य चरितं सर्वं रुदचिव स नारदः ॥

सूत्र०—देवीक निर्वन्ध देखि मुनि बोल ।

नारद—हा हा माय, कि कहव ? ऐ सब कथा कहिते दोष । हामु देव दुर्लभ पारिजात पुष्प स्वर्ग हन्ते आनि कृष्णक हाते देलो । से पारिजात जे नारी परिधान करे, से पुष्पक महिमाये परम सौभागिनी हव । इहा जानि हामु बोललु, ओहि पारिजातक जोम्प देवी सत्यभामा । तथि कृष्णे कयलि कि ! तोहाक कटाक्ष करिये आपुन हाते पुषा सकुमिणीक माथे परम सधरे से दिव्य पारिजात निष्ठा-बल । आ: तोहाक जीवनक धिक धिक ! सतिनीके अम्युदय देखि कि निमित्ते प्राण धरह ! माता तुहुं जीवन्ते मरल : हा हा विस्तर कि कहव ॥

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य शोककोपपरिच्छुता ।

मूर्च्छिता पतिता भूयौ यथा जालाश्रया लता ॥

सूत्र०—तदनन्तर नारद मुखे सतिनीक महोदय शुनि कहु कोपे अपमाने आन्धारि देखिवे देवी सत्यभामा मूर्च्छित हया पड़ल । जेहे लयंगलताक बाते उपारल, तद्वत । केदा मुक्त भेल, मुखे वचन हरल, नामत प्राणबायु नाहि लेले । पेलि सलि इन्दुमती हा हा प्राण सलि मरल बुलि बाहुं भेलि धरि कहुं शिरे जल सिंचल । ओँचोले चिचि कान्धि कान्धि प्रबोध बोलल ।

इन्दुमती—हे प्राण-सलि, सतिनीक अपमाने कि मरिते चाव ? ओहि कोन व्यवहार ? आ: से प्राण साधव स्वामी तोहारि मान साधव नाहि ओहि दुरन्त चिन्ता

परिहरि उठइ उठइ ।

श्लोक

कथंचिद् चेतनं सा लब्धा देवी पुनः पुनः ।

विनिश्चयस्तपमानेन सरोद गलीसजिषी ॥

कथा—ते देवी सत्यभामा कथंविता चेतन लभिधे घन घन निश्वात होकारि जेहे संताप कयले ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग कल्याण—जतिताल ।

पु०—माननि मार : नयन पंकज छुरे शरि ।

कोकारवे स्वाता, हासा भेलि देहा,

घन घन देखो आन्धिवारि ॥

पद—सतिनीक उदये हृदये दहे आसि

अधिक मिलये मन तापे ।

धिक अवजीवन दीवन मोहे अमागि

रागिनी करत बिलापे ॥

हरि हरि पीछु मेरि बेरी अधिक भेलि

अतये कमलि अपमाना ।

धरणी लुटि लुटि बिलपति आला

कृष्ण किकरे रतमाना ॥

सूत्र०—देवी सत्यभामा, ओहि सकृषण बिलाप-अपमान कये धिक तदनन्तर कलह भिय

नारद पुनश्चरि कृष्णक आयु गिषा जे बोलल ताहे शुनइ ।

नारद—आहे श्रीकृष्ण तुहुं एथा कोन मुखे रहइ ? से पुषा सत्यभामा पारिजातक निमित्ते अपमाने अन्नपान सब चाडल, परम तापे मरयिछे । हा हा चक्षुणे देखिते कि पाव कि नाहि पाव । देव, सत्यरे जाव ।

श्लोक

मुनेर्वचनमाकर्ण्य माधवो भक्तवाग्धरा ।

द्रुतं तस्य गृहं प्रागात् प्रियापाः प्रेमविह्वलः ॥



सूत्र०—मुनि कस्ये पुयाक दुख मुनि श्रीकृष्ण प्रेमविह्वल हुवा मुनिक कातर करि कहु  
चात पुछि जेछे सत्यभामाक समीप चलल ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग तुहा—जतिमान ।

प्र०—मुनि कहियो कहियो कपट परिहरि ।  
प्राणै कि जीय मोर गुणै सुन्दरि ॥

पद—मानिनी न सहे तिलेको अपमान । मेरि अपराधे केछे भरष प्राण ॥  
पुयाक सन्तापे तापे दहे शोक आगि । कुसुम ना दिया भेलो तिरी रष भागि ॥  
बुझाइते नयन पुयाक पाइल कोल । देखि आकुल कृष्ण किङ्करे बोल ॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण प्रेम विह्वल हुवा पुयाक देखल, लोटके मुख मलिन । घन घन निश्वासा  
फोकारि माटि लुटि रह । ताहे देखि श्रीकृष्ण हा हा कि भेलि बोलि आंको-  
आलि भरल । नयनक नीरे भुरावे, आश्वाति बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, गोटा एक फूल रुकमिणीक देखो । से निमित्ते यदि अपमान करइ,  
तबे उठइ तोहाक एक शत पारिजात देवव । रुकमिणी, जाम्बवती तोहाक  
सम सौभागिनी हवे नाहि । तोह हामाक प्राण सन पुया जानि ताप तेजइ ।  
तोहारि दुख देखि हामार हृदयवे सहये नाहि । पुये हामाक शपत उठइ उठइ ।

श्लोक

प्रियं प्रणयकोपेन निःश्वस्यतः ततः सती ।  
धूर्त्तलापेः दुर्भगांश मां किमर्थं त्वन्विकश्यसे ॥

सूत्र०—तदन्तर कृष्णक वाक्य मुनि देवी सत्यभामा स्वामीक पिडि दिने कहौ हेठ माथ  
सकाशा कन्दन कने बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हामि दुभागाक कपट वाक्ये कत कदर्शना करइ ? ये तोहार  
मुपतमा ताहेक समीप चलइ । हामाक कोन प्रयोजन थिक ।

सूत्र०—ओहि बोलि बहुत विलाप कये कृष्णक ये बोलल ताहे देखइ शुनइ । निरन्तरे  
हरि बोल ॥

गीत

राग श्रीगन्धार—जतिताळ ।

प्र०—केसाव हे बुझलहुँ तुहुँ, जानलोहौ तोहो व्यवहार ।  
अतवे चातुरि चोरि चलहु बहुरि हरिण ।  
याहा पुया रमणी तोहारा ॥

पद—तोहारि कपट कृष्ण नासुभिक मानलो हामु ए  
नाहि सौभागिनी सम मोइ ।

येछन पीरिति रीति सखहि विदित भेलिरे  
आगु जानलौ मति तोइ ॥

ओहि अपमाने प्राण नाहि भरव हामुरे  
बोइल जीवनक आशा ।

आगु पिउक पडि बहु विलपति बाला रे  
कहहु शंकर हरिदासा ॥

सत्यभामा—हे स्वामी हम तुमांगा । सतिनीक अधीन तुहु, हामाक कतये विकर्षणा  
करइ ? ओहि अपमाने हामु प्राण राखव ? आइ सख हामाक जीवनक  
थिक थिक ।

सूत्र०—ओहि बोलि देवी कान्दि कान्दि मुग्धित हुया पड़ल ।

श्लोक

कुर्वन् राक्षसं रामाभारिणाकुलमानसः ।

प्रियवाक्येस्तु तां शान्तिं सत्ययामास माधवः ॥

सूत्र०—ताहे देखि श्रीकृष्ण हा हा बोलि वाहु भेलि भरल । पुयाक तुस देखिबे मरम  
चइल । कमलनयनक नीर भुरावे, प्रेमे प्रमोद बोलल ।

पदाइ—पुयाक तुस देखि न सहे शरीर । कमल नयन भरि भुरि जहे नीर ॥  
आलिनि पुयाक चापि धरि कोल । करि आश्वासा वचन हरि बोल ॥

हे हे प्राण-पुया शुन चात । देखहु नाहि तोहौ पारिजात ॥

अत अपराध सह्य अब मोहि । तुया सम सौभागिनी नाहि कोइ ॥



करमिणीक देल गोटाव एक फूल । ताहेक लागि तुहुँ अतवे आकुल ॥  
 पारिजात तब समूल उगारि । रोपन करब आनि पुवा बाडि ॥  
 भव मोहि वाक्य नाहि पतिआवा । कहलु सत्य सत्य गुन जाया ॥  
 अब तेजहु ताप कुमारि । न सहै हृदि दुख देखि तोहारि ॥  
 हामाकु वापत खेइलहु माथे । उठह उठह पुवा डेरि, धर हाते ॥  
 कर काकूति नति जगत रईश । रमणिक मने किछो मिलल हरीष ॥  
 परम ईश्वर कर कातर पुयाक । देखु अद्भुत भक्ति माहिमाक ॥  
 ज्ञाना महेशक वाक्य कह सेवा । माथे खेइ मझोल सहि देवा ॥  
 कृष्णक लीला बुझये नाहि पारी । पूर्ण काम हरि कि करव नारी ॥  
 भक्ति कयलि हरिक मन मोल । जानि करह तर हरि हरि रोल ॥

सूत्र०—तदनन्तर सखि इन्दुमती बोच ।

इन्दुमती—हे प्राण सखि, परम ईश्वर तोहारि स्वामी माथे खेइ धर अतवे कातर  
 करेछे ? आर कोन मान साधित रहल ? सखि ताप तेजह, उठह उठह ।

सूत्र०—देवी स्वामीक अतवे विनय वाणी श्रुति कहूँ किंचित चित्त शान्त भेल ।  
 श्रीकृष्ण ताहे देखि आलिंगि तोलि बेठावल । पीत वस्त्रे शरीरक धूलि झाड़ल,  
 केहू वाग्वल, निज हस्ते कपुल-ताम्बूल भूजावल ।

श्लोक

ततो देवी सत्यभामा कृष्णवाक्यामुतेन सा ।

प्रीता प्रसन्नवदना प्रणम्याह प्रियं हरिम् ॥

सूत्र०—देवी स्वामीत महामान लभिने आति प्रसन्नमुखी हवा श्रीकृष्णक प्रणामि बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी हामाक पारिजात तब बिते तुहुँ सत्य कवल जानि बिलम्ब छोड़ि  
 ऐखने आनिया देव । जाये पारिजात नाहि देखु तावे धारी प्रवेश नाहि,  
 हामु सत्य कवे बोललु ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, पायी नरकाधुरे देवता सबक जिनिथे सर्वस्व आनल । आगु ताहे  
 मारि देव कार्य साधो, बाबु पारिजात आनो ।

देवी—अः स्वामी उचित कहल, आगु देव कार्य साधि तोहि यात्राए पारिजात आनह,  
 हामु तोहार संगे चलब ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, तुहुँ स्त्री जाति, युद्धक समये तोहारि गमन उचित नहे ।

देवी—हे स्वामी, हामार बहुत सतिती, हजार पारिजात आनि कोन लीक देव ताहे  
 बुझये नाहि । हामु कदाचितो तोहारि संग नाहि चारब ।

श्रीकृष्ण—हे पुये, तुहुँ यदि हामार संगे चलब तब सत्तरे राजह ।

श्लोक

कृष्णमन्येत्य भगवान् जगद् नारदस्तथा ।

शतं किल भवान् भार्याभक्ति-सक्तोऽहसि केनच ॥

कथा—नारद चकोषमाह ।

नारद—हे कृष्ण, जानल तुहुँ स्त्रीक लाइका । देवकार्य सब परि रहल, तोहार माय्याक  
 बाबु बुल्ले सब दिवस गेल ।

श्रीकृष्ण—हे मुनिराज, स्त्री बुझये से नाहुँके । कि करब ? कुमारिक हात ऐडाइते  
 पारये नाहि । हे मुनिराज, ऐ चलइछे । क्रोध नाहि करबि ।

सूत्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण अति सत्तरे यात्रा कय चलल ।

श्लोक

सहस्रमकरोत् कृष्णः प्रयाणं प्रियया सह ।

धनुर्लंकारघोरेण दश दिशिः प्रक्रमयन् ॥

कथा—श्रीकृष्ण धनुर्लंकारे दशदिश कम्पाइ पूवा सहित बेछे पहान कयल ताहे देखल  
 शनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग माउर घनश्री—एकताल ।

ध्रु०—कयलि पयान बंदुराह । करे सारंग संगे पूवा चलि जाइ ॥

पद—श्यामल अंग सुरंग पीतवासा । बिजुरी उज्ज्वल नय वन परकाशा ॥

अवध चरण मंजीर कद रोल । ताहे मजोक मन शंकरे बोल ॥

कथा—श्रीकृष्ण ओही प्रकारे पिया सहित प्रयाने चलछे । से समये नारद आलि बोल ।



नारद—हे हरे, तोहो सम स्त्रीजीत पुरुष कबहो ना देखि । बुद्धक समये स्त्रीक चोरये नाहि पार । तुहुं जगतगुरु तोडाक जस गाइ स्त्रीनिबो लोकक बेदाये, अः हामाक लाज भेल ।

कृष्ण—हे मुनिराज कि करब, पारिजात निमित्त सत्यभामा प्राण चाइव, उनिकर निर्धन्य कत रहबो ।

नारद—हे कृष्ण, कामासुर पुरुषक ऐछन अवस्था । स्त्री जे आशा करे, से अवश्ये करिते लागे । से होक, से कामरूप नरकासुरक पाट, ओहि द्वारका हन्ते स्वभाव मेस चारिक पथ । स्त्री लया चाहिने बस्सर दुइ चारि पावव । अः देवकार्य भल्ल सवरे साधल । एक कर्म करइ, तोडाक बाहन गरुड पक्षिराज ताहेक आशा करइ । ताहेर स्कंधे चढ़िये सत्वर नरकासुरक मारइ ।

सुत्र०—मुनिक वाणी सुनि श्रीकृष्ण पृथाक बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे पूये, मनि भल्ल कइल ।

देवी—हे स्वामी, हामितो पावे हाटिते पारये नाहि । ता मुनि श्रीकृष्ण बाहनक स्मरल । आहें गरुड पक्षिराज, सवरे आव सवरे आव ।

श्लोक

आहन्वागत्य गरुडो नत्वा कृष्णं कृताञ्जलिः ।

मम स्कन्धे समाकृष्ट जहि भीमं दूराशयम् ॥

कथा—गरुड बोल । हे स्वामी, हामु थाकिते तोहों पावे बेदावब ! अः हामार स्कंधे चढ़ि पापी नरकासुर बध गिवा ।

तदनन्तर श्रीकृष्ण सभायें गरुड कन्धे चढ़ि परम लीलासे चलल ।

श्लोक

प्राञ्ज्योतिषं सोऽस्ति जनेन जायया

मुष्णमासुष्य ययौ जनार्दनः ।

अग्नेन सम्प्राप्य पुरं परेशो

महोत्सवो शंखरवं चकार ॥

कथा—श्रीकृष्ण गरुड बाहने चालुकेने कामरूप पाइ पांचजन्य धुनि कयल । ताहे सुनि नरकासुर लेवि आवल, श्रीकृष्ण येछे बध कयल, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

पवाद—राग कानड़ा ।

चलल गोविन्द गरुडक कन्धे । नरक मारिते कयलि प्रबन्धे ॥

वायुक वेगे चलल पक्षिराज । तिलेके पावल कामरूपराज ॥

कुंकल शंख हरि बारे बारे । सुनि शत्रुक भेल हृदय विदारि ॥

जानलु आवल माधव पाइ । गरजे दानव बुद्धक लाइ ॥

समरक साजि बजाख्य होल । धर धर मार मार करे बहुरोल ॥

पावे मुर नरकासुर रागि । खण्डा पिकावय कृष्णक लागि ॥

हरि टंकारल सारंग भिड़ि । बरिगल काग देख कहों पीड़ि ॥

कावल बाहु कन्धे कर शिर । मारल हरि सय दानव वीर ।

पैख पलावत दानव असुर । बाण प्रहारिये मोरछ मुर ॥

कोपे चक्र खेरि जसदाथ । काटल दाहन नरक माथ ॥

देखि देवक ठासव बहुल । बाजे तुन्दमि बरिषय फूल ॥

अय अय यादव करे बहु रोल । सामाजिक सब हरि हरि बोल ॥

सुत्र०—से मुर नरकक मारि कहूँ श्रीकृष्ण यश सावल । देखि देव सब आनन्दे तुन्दमि जाबाइ । जय कृष्ण अय जोलि शिरे कुसुम बरिषल । श्रीकृष्ण सभायें आनन्दे रहल ।

श्लोक

ततो वसुमती पौत्रं पुरः स्थाप्य हतात्मजा ।

विलयन्ति तदा कृष्ण नत्वा प्रोवाच दुःखिता ॥

वसुमती—नरकपुत्र बध भेल देखि वसुमती परम रन्तापे ताहेक पुत्र भगदत्त शिशुक आग कय कहौ कृष्ण दर्शन निमित्त येछे चलल, आहें लोक ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।



## गीत

राग साउर धनश्री—एकताल ।

ब्र०—पिउक समीप चले माह, हरिदरशन चले माह ।

शिष्ट समे वसुमती लहु लहु गति माह ॥

पद—सुतक संतापे तनु भेलि हासा । छोटके लेपित मुख फोकारे निश्वासा ॥

स्वामीक कह पाये परि परणाम । कहनु शंकर गति मेरि राम ॥

कथा—प्रेचन शिष्ट समे वसुमती आसि कहूँ श्रीकृष्णक परि परणामि कर जोड़ि बोलल ।

वसुमती—हे स्वामी श्रीकृष्ण, कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर परम पुरुष पुरुषोत्तम तुहँ जगत-  
गुरु । तोहाक द्रोह करि पापीपुत्र नरक निज पाये नाश गेल । तोहाक पुत्र  
ओहि शिष्ट भगदत्त नातिक तोहार पाये, समर्पल । आहँक रभा बरह  
हामार सन्तति रहोक । तोहारि चरण पंकजे कातर कये अतवे प्रसाद  
माथु गोसाई ।

ब्र०—ओहि बोलि वसुमती, बहुत बिलाप श्रीकृष्णक आगू कयल । ऐछन कहना  
वाणी शुनि नारायण वसुमतीक आश्वास कय बोलल ।

श्रीकृष्ण—आहे वसुमती, तोहो ताप तेजह ; तोहारि पुत्र नरकासुर भूमिक भार भेलि ।  
से निमित्ते इहक मारि तोहार भार दूर कयल । तोहारि वचने ओहि  
भगदत्त शिष्टक कामरूप पाटे राजा पाठव, तुहँ चिन्ता नाहि करव ।

ब्र०—ओहि बुलि श्रीकृष्ण वसुमतीक आलिगि आश्वासिसे अन्तपुर प्रवेशि कहौ  
भगदत्तक राज्य अभिषेक कयल । षोडश हजार कन्या ताहरे वारीत पाइ  
झारकापुर पठावल, अदितिक कुण्डल, वरुणक छत्र, मणि वरैत लोभा, गरुडक  
कन्धे सत्यमाना समे स्वर्गक कौतुके चलल ।

## श्लोक

ततः सन्निकटं दृष्ट्वा स्वर्गं कृष्णो मुदाद्युतः ।

दम्भी शत्रवं पांचजन्यं हर्षयन्निधिं देवताः ॥

ब्र०—मूर नरकासुर मारि श्रीकृष्ण स्वर्ग समीप पाइ परमानन्दे शंखध्वनि कयल ।

ध्वनि शुनि जानल देवता सब, अः हामार स्वर्गक लागि श्रीकृष्ण आबल ।

परम हरिसे जय जय बोलि तुन्दभि वजार शिरे कुसुम बरियल । ताहे पेलि  
सत्यभामा पिउत पृष्ठत ।

सत्यभामा—आहे स्वामी, ओहि कोन स्थाने पावल हामु ? जे तुन्दभि वजार कुसुम  
वरिये ऐ सब के ? हामाकु परिचय कराव ।

## श्लोक

कृष्णः प्राह प्रियां पश्य इमान्भावतीपुरीम् ।

आगता देवता एताश्चा मां देवी दिदृक्षुः ॥

कृष्ण—हे देवी, तुहँ नाहि जानह, ओहि अमरावतीपुरी, एहि देवता सब हामाक  
देखिते आबल, देखो ओहि ऐरावत कन्धे वासव भिक् । उनिकर महादेवी  
ओहि शची, ऐसब दिग्पाल, सिद्ध विद्याधर ।

देवी—हे स्वामी, जे विमानक उपरे प्रकाश करैछ ओहि कोन बुझ ?

कृष्ण—हे पूये, नाहि जानह ? जाहेर निमित्ते मामिनी होइछे से पारिजात तह ओहि ।

देवी—(इहमाह) अः हामार मनोरथ साफल भेल । ओहि पारिजात पुष्प भरिने  
सतिनीसबक माने लासवेश करि बेड़ावव । हे स्वामी तत्वर करो ।

## श्लोक

ततोऽहं कौतुकं दृष्ट्वा इन्द्र आगत्य सादरम् ।

दोर्भा देवं परित्यज्य जगाद मधुरं वचनम् ॥

ब्र०—तदनन्तर इन्द्र आसि कहूँ गौरवे कृष्णक भरल शची सत्यभामाक आलिगि  
सत्कार कयल ।

इन्द्र—हे कृष्ण, पापी नरकासुरक मारि हामाक कृतार्थ कयल । बार बार तुहँ उडार  
करह । तोहाक गुण सुभवे नाहि पारि ।

ब्र०—ओहि बुलि प्रेमलोठक मुखे इन्द्र मीने रखल ।

## श्लोक

अदिति मातरं पश्यात् सभायौ जगदीश्वर ।

प्रणम्य देवमात्रेहदादमृतस्त्राविमुण्डले ॥



कथा—तदनन्तर श्रीकृष्ण इन्द्र सहित अदिति मातृक प्रणाम कवे कहूँ अमृत कुण्डल दोहो निवेदल । शची सहित सत्यभामा अदिति शाशुक जानुवारि प्रणाम कयल ।

### श्लोक

ततः सा देवजननी कुणां भवा महेश्वरम् ।

ब्रह्मजलिः जगद्वारं मुती देखि मनोदधे ॥

कथा—अदिति श्रीकृष्णक परम ईश्वर जानिबे येछे तुति आरम्भल ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ॥

### पद्याङ्क

जय जय जगत-निवासा । जय जय असुर विनाशा ॥  
जय छेदक भय पाशा । जय तारक निज पासा ॥  
जय जय ईश्वर मुरारि । जय जय असुर संहारि ॥  
जय जय सारंग - धारी । जय जय ब्रह्म अधिकारी ॥  
जय जय जगतक धाता । जय जय पातक धाता ॥  
जय जय भूतक धाता । जय जय मुक्ति दाता ॥  
जय जय यादव रामा । जय जलधर तनु-धामा ॥  
जय जय पूरण मनकाम । जय भयतारक नाम ॥  
कद कदना यदुराह । लेलौ शरण तुवा पाह ॥  
परम पुरुष कद नाणा । तुवा बिने गति नाहि आना ॥  
भव-बंधन चोड़ मेरि । कर ओहि तुति कर योदि ॥  
कदलि पारि परिणाम । सबहि बोलहु राम राम ॥

### श्लोक

आदित्या ईश्वरज्ञानं निशम्य मधुसूदनः ।

मोहनार्थं निजमायां ततान जनमोहनीम् ॥

सूत्र०—तदनन्तर अदितिक ईश्वरज्ञान देखिबे वेण्णवी माया बिलारि अदितिक मन मोहित करिये श्रीकृष्ण कर योरि प्रणाम कव बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे माता, तुहौं हामार परम देवता । आमाक सर्वथा आशीर्वाद करअि ।

सूत्र०—अदिति छुनि कहूँ परम सकलचिन्ते कृष्णक गले धरि कहूँ बुल्लि लागल ।

अदिति—हे पुता, तुहूँ चिरंजीव हव । हामाक बरदाने देवता असुर दुहाक जिनिये नाहि शक्य ।

सूत्र०—तदनन्तर श्रीकृष्ण देवित विदाय कयल । वरुणक छत्र मणिपर्वत इन्द्रक हाते समथल ; वैवतासवत त्रिदाव करि कहौं नारद सहिते सभार्ये परिवर्ति येछे चलल ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग गौरी—वृत्तिताल ।

सू०—लीलागति पाह, भुवन भुलाइ मधुर मूर्ति मुरारि ।

लवलासे चले रंगे संगहि धर नारि ।

पद—उरें वनमाला माणिक मणि वनन ईसत हासा ।

तप जलधर सोभा तनु पीत अम्बर भाषा ॥

पद पंकज मंजीर रोले, पल्लव परकाशा ।

भक्ति मुकुति हेतु कहतु केशव दासा ॥

सूत्र०—येचन मधुर मूर्ति श्रीकृष्ण परम लीला गति स्वर्ग वासीक मन मोहि कौतुक चलल । तदनन्तर ये कथा भेल, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

### श्लोक

धृत्वा वस्त्रे पति प्राह सती रोष समन्विता ।

क वासि पारिजातं स्वं नानीय मधुसूदन ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवी सत्यभामा कृष्णक पीत वस्त्रे धरि कहौं महाक्रोध दया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, तेहूँ भल तप कयल । पारिजात नालया तुहूँ काहा जाव । तोहाक चित्त बुझबे नाहि ।

श्रीकृष्णक—हे पूये हामु विचोरल रोष नाहि धरवि । श्रीकृष्ण नारदक बोल । हे क्षत्रि-राज, तुहूँ सबरे याव । इन्द्रत सोजि पारिजात वृक्ष पृथक निमित्ते सबरे आन शिष्य ।



सूत्र—कृष्णक बाणी सुनि नारद जलि गिया इन्द्रक बोल ।

नारद—हे देवराज, श्रीकृष्ण तोहारि पारिजात खोजल । सत्यभामाक निमित्त आनि सत्वर दिया पठाव ।

सूत्र—नारदक बाणी सुनि परमकोष होया शची उत्तर देख ।

शची—अः अभाग्य कयाल ! इन्द्रानी शचीक पारिजात कथाक, मानुषी सत्यभामा पिन्धित साध गेल । ऋषिराज बोल गिया, यहे अनेक पुण्य कय कहुँ अनरावतीक अधिकारिनी हय तेवे पारिजात परिचित करिते पावे; हमार पारिजात इन्हे दिते पाखे नाहि ।

इन्द्र—हे ऋषिराज, देवराजीक पारिजात किमते दिते पारि ? स्त्रीक कथा कृष्णते विवित, बोल गिया ऋषिराज ।

### श्लोक

नारदस्तु ततोऽप्येतत्त्व भगवान्द्रु केसवम् ।

इन्द्रान्वा वर्णितं यत्तत्तु कृष्णे सर्वमवर्णयत् ॥

सूत्र—तदनन्तर नारद परिवर्त्ति आसि कहुँ शची जे बोलल, कृष्ण सत्यभामाक आगु सभ कहल ।

नारद—हे कृष्ण, पारिजातक निमित्त तुहुँ पठावल, हाथु बड़ि लग्न भेलो । सत्यभामाक बहुत मोलि पारावल मात्र । पारिजातक नाम सुनि शची कोये बोलल—अः कथाक मानुषी सत्यभामा शचीक पारिजात पिन्धिते इच्छा कयल । अभाग्य कयाल; यध तपः रूप आचरि जन्माशरे अस्त्रावतीक अधिकारिणी हय तब पारिजात पावब बल गिया । हे कृष्ण, देवीक धिक्कार सुनिवे हृदय रहे, हा हा कि भेलि ?

सूत्र—ताहेक सुनि सत्यभामा कोये कथमान हया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, हमाराक कदमिते तोहों आनल । शानवक बेरि शची, ताहेक चाटु कय पारिजात नेवब । अः धिक्कार होक । हे प्राणनाथ काहेक भय धिक् ? सत्वेरे पारिजात आन भिया ।

नारद—अः देवी महल कहल । हे श्रीकृष्ण सत्वर पारिजात आनइ ।

### श्लोक

निशम्य सत्यभामाया वचनं कञ्जकोपन ।

जहार सहस्रात्म्य पारिजातवर्ण हरि ॥

सूत्र—तदनन्तर श्रीकृष्ण पुषाक वाक्प सुनिवे तबाले पारिजातक समीप चापि सन्धि उपारि आनल । देखि रखीया सभ कोलहाल कये बोलल ।

रखीया—हे कृष्ण, शचीक पारिजात निवे तोहारि कोन बैपहार ।

सत्यभामा—अये रखीया सभ, तोहाक शचीत कह गिया सत्यभामा पारिजात निवा बाइ, अइ यव शक्ति धिक् राखीक आन्धिया ।

सूत्र—सुनि रखीया सभ इन्द्रशचीक प्रणामि कहल ।

रखीया—हे माता शची, तोहारि पारिजात तब सत्यभामा बड़ाइ करिये स्वामीक इतें हरि निवा चाय, जानि ये सुमाइ तर करइ ।

### श्लोक

पारिजातस्य हरणं निशम्य कुपिता शची ।

पतिं पुरन्दरं माह धिमस्तु तव विक्रमम् ॥

सूत्र—पारिजात हरण सुनि शची कोये पुरन्दरक बोलल ।

शची—हे स्वामी तोहो विचमान धाकिते हमाराक पारिजात मानुषी भिया जार । आः तोहाक धिक्कार धिक् । वज्रक धिक्कार होक ।

सूत्र—ओहि बुद्धि इन्द्रक अगे बहुत दिलाप कयल ।

इन्द्र—हे पूये तुल जोड़इ, हमाराक आगु कृष्ण कोन हय । ताहेक जिति पारिजात एखते आनब, चिन्ता नाहि करबि ।

सूत्र—ओहि बुद्धि इन्द्र परम प्रारम्भे राजि धनुकार धरि कहुँ देख राव संहित शची समन्विते ऐरावत कये खेदि आवल इन्द्र ।

### श्लोक

गत्वा सञ्जाजितसुतां प्रोवाच कुपिता शची ।

नेष्यसि त्वं पारिजातं किंनु वज्रधरे स्थिते ॥

शची—अये सञ्जाजितक कुमारि, गुहूँ मानुषी हवा हमारा पारिजात निवा पोष ।



आ; तोहाक अभाय मिलल, अब बन्धनरक हाते सवंशे नाहि माय तब सत्तरे  
पारिजात चोड़ह ।

सूत्र०—ओहि वोळि वेळे गरजल ताचे वेळह शुनह । निरन्तरे हरि वोळ ।

गीत

रान आसोआरि—खरमान ।

प्र०—मातुषी साहज ऐछत तोहारि ।

हरति कुमुद हमारि ॥

पद—स्वामी पुरन्दर कीर वज्रधर, आछन्त देव अन्तकारी ।

पारिजात तब चौरह मोर, राखडू जीवन कुमारी ॥

तोहारि स्वामी माधव मातुष, कयलि गरज ताचे आवि ।

ब्रह्म आगे सोहि कोन होइ, कर शची एछन बडाइ ॥

शची—आहे सत्यभामा, तोहारि स्वामी माधवक कथा राम तब जानी । ओहि गोपी-  
विठाल गोपाल । उनिकर आगू गोकुलक स्त्री नाहि रहल । देखू कंसक

दासी कुञ्जि ताहेक हातक एडावळ नाहि । ताहेक आर कि कहू ? ऐछन  
अनाचार कृष्णक गरब कवे कहीं हामाक पारिजात निया जाय ?

अः वज्रपाते सवंशे नाश भेलि, जानवि ।

श्लोक

निशम्य गर्भवाक्यं सा सत्यभामा हरिप्रिया ।

कोपेन कम्पितवती शचीसामाग्य वल्गति ॥

सत्यभामा—आये इन्द्राणी, जगतक परम शुभ हमार स्वामी जाहेर नाम शुभस्ति महा

भद्रा पावी श्रव संसार भित्तरे, ताहेक अतय निन्दा करह ? आये मिलिनी  
भस्ति न जान ? तोहारि स्वामी इन्द्रक कथा कहिते नया से उपजे ।

देखो अस्मावतीक यत वेश्या तोहाक स्वामीक से नाहि आण्डल । तोहारि  
स्वामी कयलि कि । गौतम ऋषिक भार्या अहल्या, ताहेक साया करि

कहुं जातिभ्रष्ट कयल । तस्मिन्मते सवे शरीर हाकि पौनिडाक भेल । अये  
पामरि एछन इन्द्रक हामाक आगु वखानह ।

सूत्र०—ओहि वुळि सत्यभामा वेळे वल्गल ताचे वेळह शुनह । निरन्तरे हरि वोळ ।

गीत

राम वेळआळ—खरमान ।

प्र०—पामरि हरिक करसि बडाइ ।

आगु खरल पंक्रज-रज परशि गारि देसि कति लाइ ॥

पद—ओहि जगत गुन वल्लभ-यद्र कर परि परणाम याहारि ।

केणे दासी शची ऐछे स्वामीक कर कन्दल त्रयस नेहारि ॥

बाहेर नाम-गुण गाइ पावी तरे भक्तसि मुमुक्ति मिलाये ।

ऐछे गोविन्दक निन्दन नामरि शंकर कह इरि-शवे ॥

सत्यभामा—अये दानवक चेटी इन्द्राणी, हमारि आगु तोहारि ओये  
बडाइ । हागु परम दर्द कये बहु पारिजात आनळ । देखु अब तोह  
स्वामी पुरन्दरक वत सकति थिक ; बुद्ध कय हमार हातक पारिजात निप

जाडक, देखि तब सकल बडाइ करलि ।

सूत्र०—देवी सत्यभामाक अतये विवर्धना शची शुनि शची कोपे अवमाने इन्द्रक  
चोखल ।

शची—हे स्वामी देवराज, तोहाक जीवन थिक थिक, मातुषी स्त्रीक अतये कर्धन  
शुनि रहइछ छि, तोहाक पुत्रप रोज विछो नाहि । अः देवताक इन्द्र मिछा  
चोकाचसि ।

श्लोक

सतः पुरन्दरो देव्या पीडितो वाक्यशायकैः ।

कोपेन वसुरादाय सुदाय सन्दुखोऽभवत् ॥

सूत्र०—तदनन्तरः पुरन्दर वाक्य-शरे पीडित हुषा शचीक गरिह शुनि कहीं परा कोप  
धतु भरि बुद्ध करिते श्रीकृष्णक सन्मुख मेलह । देखि सारंग प्रकाश श्रीकृष्ण

गण्डक कन्दे इन्द्रक समुख हुपा रहल । ताहे देखि पुरन्दर दर्पे झोलल ।

इन्द्र—अये यादव, शचीक पारिजात केळे निया जाय । ओहि शीक्षतर शरे तोहारि  
प्राण चोडावव हामाक आगु बादा नावव ।



सूत्र०—ऐछन प्रकारे बहुत बलाबल । दिव्यजान हानि चैछे रामोवर पुरन्दर दुहौ महाबुद्ध  
कपल आहे लोक ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग तुर—पड़िताल ।

ब्र०—गरजि बासव बाण प्रहारे । आजु जीव छेहु तोहारि रे ॥

पद—पेखि ताहे हरि करे सारंग धरि । कहु शर सखर मुरारि ॥

जेदि आणाय धरलि चेतन । इन्द्रक हृदये विधारि रे ॥

कथा—कृष्णक बाण प्रहारे मूर्छित होइ पुनः चेतन पाइ इन्द्र ओछ ।

इन्द्र—अवे श्रीकृष्ण यव पारिजात ओइज तव चोरह ; नाहि ओहि ब्रज सन्धाने तोहारि  
प्राण चोड़ाउँ ।

कृष्ण—अवे दुष्ट देवराज, हामाक भीति देखलान, यत शक्ति थिक प्रहार देखि ।

सूत्र०—शुनि इन्द्र ब्रज भरिये पुनु स्वस्थ हवा कृष्णक हानल । श्रीकृष्ण हासि हासि  
पेछे लुम्फि धरल ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ॥

पद—स्वस्थ कलेधर पुनु पुरन्दर, धरल ब्रज बीर तोलि ।

हानल संधाने बाण अब लेलहुँ रह रह यादव बोलि ॥

सूत्र०—बाणशुद्धे नयारि पुरन्दर परम आतोपे कोमे श्रीकृष्णक वज्र प्रहारल । हरि  
हरि वज्रक लुम्फि धरल ।

### श्लोक

ततः कृष्णो यथा चक्रं शक्रं प्रति गृहीतवान् ।

इन्द्रो भीत्याभ्यद्रवत् स पञ्चान्दीपयन् अगौ ॥

कृष्ण—अवे दुष्ट देवराज, यव तोहारि प्रहार हानु खल्ल, अब हामार प्रहार सम्बरह ।

सूत्र०—ओहि बुलि परम प्रारम्भे इन्द्रक लालि चक्रतोखि धरल । ताहेक देखि इन्द्रक  
हृदय कम्प लागल । हात पाय धिर नोहे, महा भये हरित चादि लवहि  
पलावल । ताहे पेखि श्रीकृष्ण हासि हासि पाचु पाचु पेछे इन्द्रक खेदल ताहे  
देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग कानड़ा—पड़िताल ।

ब्र०—प्राणरे कातरे इन्द्र पलाइ । पाचु पाचु हासि माधवे पाइ ॥

पद—रे रे पुरन्दर डाके मुरारि । रह रह काहे पलावव वज्रधारी ॥

लभरे बासव पाचु नीचाइ । कृष्णक फिकरे शंकरे गाइ ॥

सूत्र०—रह रह इन्द्र बोलि डाकि डाकि श्रीकृष्ण पाचु पाचु याइ, तथापि इन्द्र विभवे  
पलाइ, रहये नाहि । ताहे पेखि देवी सत्यभामा कर्धर्पना करि कहुँ हासि  
बोलल ॥

सत्यभामा—आहे पुरन्दर, तुहुँ कि निर्मिते पलावल ? देखक राजा हुया मानुप कृष्णक  
भये भंग देखह, उचित नहे । तोहारि असु पारिजातक मंजरी परिधान  
करिये शची लासबेदा करि वेडावे । तुहुँ ब्रजधर वीर अब केथे पलाव ?  
लाजक पिठि देखह । अवे पावरि शची ओहि इन्द्रक वेलाव अवधे दर्  
कयलि, अब तोहारि भतारक केछे नाहि पलाटावा ? हामु मानुषी हया  
तोहारि पारिजात निवा बाउँ, ओहि तापे मखि न जान ?

### श्लोक

ततः पुरन्दरो निन्दां देव्याः श्रुत्वातिदुःखितः ।

निवर्षोपायं वचनं सत्यभामे निबोध मे ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवीक निन्दा सुनिवे इन्द्र परिअलि बोलल ।

इन्द्र—अवे सत्यभामा, ओहि ओकृष्णक यह पानी थिक ताहेक मध्ये तुहुँ बहि प्रचण्ड  
प्रणवमा इहा हामु जानलु कि निर्मित हामाक अतये कर्धर्पना करइछ ? देख  
ओहि कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, ब्रह्मा, मरेश सेवित पाइ संकज जगतक परम  
गुरु नारायण श्रीकृष्ण । ताहेत हामु युद्ध हारल, इहात कोन लाज थिक ?  
तुहुँ स्त्री जाति किछो बुभवे नाहि, हामाक मिछा बलाह ।

सूत्र०—ओहि बोलि इन्द्र आपुनाके गरिहा कपल ।

इन्द्र—हा हा हामु वापी, माया मोहित हुया परम ईश्वरक युद्ध कपल । हामाक  
बिकार होक ।



सूत्र०—ओहि बोलि भये कम्पित तनु बाहि त्राहि बोलि कर पोरि कृष्णक आमु दंडवतें  
पड़ि परणामे तुति बोलल ।

### पसाइ

जय जय यादव देव-मुरारि । जय जय कंस केदी अन्तकारी ॥  
जय जय गिरि गोवर्द्धनधारी । जय जय भक्त मीति भय हारी ॥  
जय जय मोहित विषहर कालि । जय जय वामन बलिक निकालि ॥  
जय जय निर्जित कपिशर बाली । जय जय ब्रह्मदेव जनमाली ॥  
जय जय विभुवन अनुपास । जय जय निज जन पूरण-राम ॥  
जय जय अष्टाङ्क मोरण राम । जय जय पातेक तारेक नाम ॥  
तोहारि माया-मोहित अन्ध । कयलु युद्ध देव हामु मन्द ॥  
अत अवराध सहस्र हरि मोद । चरणे शरण लेलु अब तोइ ॥  
ओहि इन्द्र पद आपद घोर । दूर कर हरि कुमति मोर ॥  
मागजो भिक्षा परिधान कय कंथा । धरयो तोहारि भक्तिक पंथा ॥

सूत्र०—ओहि तुति करिये पुरन्दर परम वैराग्ये कृष्णक आमु परि बहुत बिलाप कयल ।

### श्लोक

इष्ट्वा कृष्णो विबुधाह तस्य तन्मिलम्भनः ।  
सन्तुष्यति यतो देव ज्येष्ठभ्राता भवान्मम ॥

सूत्र०—तदनन्तर इन्द्रक भीतिकातर देखिये श्रीकृष्ण हासि हासि हाते धरि कहों तोलि  
आश्वास बोलल ।

कृष्ण—हे पुरन्दर, तुहो हामार ज्येष्ठ भ्राता तोहारि दोष हामु किछो धरवे नाहि ।  
किछो नाहि करयो, अब तोहाक ब्रज लेहु । ओहि पारिजात यदि मुले  
नाहि देख तब गहाक निधा जाय ।

सूत्र०—शुनि सत्यभामा कोप कटाक्षे निरेखि कृष्णक दशन चर्चि मनै गरिहय ।

सत्यभामा—हा हा कि भेलि स्वामीक मति । ओहि इन्द्रक चाटु गुनल । आरभ्यार  
नरकबध निमित्तो कत कातर कये आनि कार्यविद्ध भेल देखि हामाक युद्ध  
भेजाबल । उनिकर जचने संजात भिक ! अः हामार पारिजात दिते कोन  
अधिकार रहे ।

इन्द्र—हे स्वामीकृष्ण, ओहि पारिजात तुहें निधा जाव । सुधर्मा समा सहित यत  
सम्पति शमात भिक सब द्वारकाक लागि पठावैं । ताबत तुहो भूमित रख  
ताबत उपभोग हुया रह्येक ।

### श्लोक

इन्द्रस्य ज्वनं श्रुत्वा प्रीतिः पीताम्बरो ययौ ।  
पारिजातं तदादाय तमनुशाप्य भार्यया ॥

सूत्र०—इन्द्रक सन्मान शुनि श्रीकृष्ण भार्या सहित हरिये पुरन्दरत अनुमति पाइ बेल  
पारिजात लेया कौतुके केवाव चललि, आये लोक ताहे देखइ गुनइ । निरन्तरे  
हरि बोल ।

### गीत

रस बेलोआर—परिताल ।

भू०—पारिजात लेया चलल ल्यलासे  
हासे हरिये बरनारी ।  
मत्त गज-गाहिनी कामिनी कोले  
भोले चलिय मुरारि ॥  
श्याम मुचति रत्न उरे माला  
मणि मंजीर मुरावे ।  
पुया समे चले रने तरुणी करिणी संगे  
मातंग येछे लीलाये ॥  
मकरि कुण्डल गन्द दोलि विराजति  
राजीव लोचन स्वामी ।  
कृष्ण किकर कहई हरिको  
चरणे परि परणामि ॥

सूत्र०—तदनन्तर देवी सत्यभामा सहित लीलाये कौतुके केलि कये श्रीकृष्ण द्वारिकापुर  
प्रवेश भेल । कृष्णक विजय सुनिये द्वारकात महामहोत्सव मिलल । डावे  
डावे जय-नाजन बजावल । स्वामी युद्ध जिति आवल शुनि बकमिनी सखी सब



सहित आसि कहूँ सपटे परणाम कसलि । कृष्ण आलौंगि आधासल ।  
रुकमिणी सखी समे कृष्णक एकपारो रहल । सत्यभामा गर्भ कथे कहूँ  
रुकमिणीक बोलल ।

सत्यभामा—हे विदमराज-कुमारी, तुहूँ स्वामीक थामे गोटा एक पारिजात पुष्प पावल ।  
देखु देखु यावत सोहि पारिजात तह सनुले उपारि कृष्णक हाते नाहि  
आनल, तावत छाड़लो नाहि । हमार सौभाग्यक देखो देखो ।

### श्लोक

निशम्य सत्यभामाया भार्गव विष्मकमन्दिनी ।  
श्रोवाच्च भक्तोर्महिमां वर्णयन् बहिरांगेनी ॥

कथा—सत्यभामाक गर्भ सब छुनि रुकमिणी हासि बोलल ।

रुकमिणी—अबे भगिनी सत्यभामा, कि कहैछ ? जगतक परम गुरु श्रीकृष्ण उनिकर  
चरण-सेवा करिते ब्रह्माण्ड भितरे कोन दुखलै थिक ? धर्म अर्थ काम मोक्ष  
चारि पदार्थ हाते मिलाये तुहारि पारिजात कोन कथा ?

सूत्र—देवचन भक्तिक महिमा कहिते रुकमिणीक प्रेम परखल । हरि-चरण-सेवाक  
महिमाक देखे वर्णायल ताहे देखइ छुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग वसन्त—वदिताल ।

ध्रु०—अतवे केछन कहसि मायि ।

हरिक भक्तिक सति कोन निमिलाइ ॥

पद—ओहि अरुण पद-पंकज विशाह । मनोरथ चारि पदार्थ पाह ॥

पारी प्रातेक खरे नाम गुण गाह । कह खेकर हरि बिते गति नाह ॥

सूत्र—भक्तिक महिमा कहिते कुमारीक प्रेम परखल । नयन भुराइ रहल ।

### श्लोक

सत्यभामा पति प्राह प्राह प्रभो त्वं किमु प्रेक्षसे ।  
पारिजात तव द्वारि रोपणं कुरु मेहरे ॥

सत्यभामा—हे स्वामी कृष्ण, कि निमित्त तुहूँ अपेक्षा करइ । हमार द्वारि पारिजात  
सखरे रोपण करइ ।

सूत्र—पृथाक वागी छुनि श्रीकृष्ण द्वारक विहारे आपुन हाते पारिजात तह रोपन  
कयल । देखि देवी बोल ।

सत्यभामा—हे स्वामी, अब कि कयल ? हमार बहुत सतिनी धिक । पारिजात फूल  
खोरि करि निते कत कलह करि बैड़ाव । पृथा नहे हमार द्वार निकटे  
निया रोपण करइ ।

सूत्र—छुनि श्रीकृष्ण पृथाक मनपूरि पारिजात पुनर्बार उपारि देवीक द्वार समीप  
रोपि थापल । तदनन्तर सत्यभामा मनोरथ पूरि श्रीकृष्ण स्वामीक परणामि  
सखि समे प्रशंसा कथे बहुत कौतुके कयलि ।

### श्लोक

साधिताथोऽथ नाथो सः पत्नीभ्यां सह वैदाव ।  
कौतुकी क्रीडयामास हालसंरम्भभावके ॥

सूत्र—तदनन्तर नरकासुर मारि, देवकार्य साधि, इन्द्रक जिनिजे पारिजात आनि  
पृथाक द्वारे रोपि कृत्य कृत्य हया श्रीकृष्ण भाव बूहो सहित नेछन स्त्रीक केलि  
कौतुके कयल, ताहे देखइ छुनइ । निरन्तरे हरि बोल ।

### गीत

राग पुरी—खरमान ।

ध्रु०—जगजन जीवन मधाह ।

करतु कौतुक केलि कामिनी मिलार ॥

पद—कुंचित चान चिकुर चित्त अथ  
कर चुम्बन वतमाली ।

कांचुरि पोरे भोरे रसिक गुण  
कुच नल वत धालि ॥

रमया रमणी भिछिते माणिक  
मकरि कुण्डल दोले ।



हीर रचित मणि मोतीम माले  
 रेशमहार उरे लुले ॥  
 चरणे रतन मणि मंजीर भक्तके  
 कनक किंकिणी करो रोले ।

श्रीजगतानन्द भक्ति रत्तिकनिक  
 कृष्ण किकरे ओहि बोले ॥

सूत्र०—ऐछन केलि-कला कौतुक कचे श्रीकृष्ण भक्ता रमणी सबक मनोरथ पूरि  
 द्वारिकापुर प्रवेशि रहल । ओहि पारिजात हरण हरिक परम लीला-चरित्र  
 अछाये जे सब लोके सुने भणे कृष्णक चरणे ताहेरि परम भक्ति ब्रह्मवद ।  
 जानि निरन्तरे हरि बोल ।

श्लोक

कृष्णपादप्रसादेन शंकरं कृष्ण किकरः ।  
 चकार श्रीपारिजातहरणं नाम नाटकरु ॥  
 मुक्तिमंगल ॥ नयन छन्द ॥ भट्टिमा ॥

जय जय जग - जीवन मुरारि । कंत - केही - बक - अथ - अन्तकारी ॥  
 सो व्यापक त्रिभू ब्रह्म अधिकारी । भुक्ति मुक्ति नित्य करत तोहारि ॥  
 जय जय परम पुण्य देवको देवा । ब्रह्मा महेश कर जो पद सेवा ॥  
 सोहि नारायण भुवन आधारी । भुक्ति मुक्ति नित्य करत तोहारि ॥  
 जय जय माधव धेनुक मारी । आनन्द विरिन्द विपिन - विहारी ॥  
 सोहि गोपाल गोवर्द्धनधारी । भुक्ति मुक्ति नित्य करत तोहारि ॥  
 जय जय पीताम्बर बनमाझी । कालिन्दी हृदे जो मर्दल कालि ॥  
 सोहि गोविन्द भक्त - भवहारी । भुक्ति मुक्ति नित्य करत तोहारि ॥  
 जय जय दुष्ट दैत्य अन्तकारी । कुवलय मोहन दस्त उपारि ॥  
 राखत रमन जोहि गोपिनी नारी । भुक्ति मुक्ति नित्य करत तोहारि ॥  
 श्रीजगतानन्द दलपति जान । हरिको पद - पंकज भवमान ॥  
 करावत नाट ओहि बहू छन्दे । कृष्णक भक्ति करिते प्रवन्दे ॥

पारिजात हरण आहेरि नाम । छुन बुधजन हरिगुण अनुपास ॥  
 कलियुग मध्ये भरम ओहि सार । नाहि नाहि गति हरि विने आर ॥  
 कयलि कलि देखु एकाकार । पाप - पुण्य किछो नाहि बिचार ॥  
 मलमति शोक अबहु नाहि जानि । नाहि नाहि गति विने शारंगवाणि ॥  
 भज हरि चरणे जोड़हु सब आश । हरिनामे कच मुहद्व विशोवास ॥  
 भरमक उपरि राजा नाम । जानि सबहु नरे बोल राम राम ॥

—३५—